International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 08-12-2020; Accepted: 23-12-2020; Published: 09-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 03-08

सामजिक समस्याओ का खुलासा: लखु कथायें

डॉ. रंजित एम
अद्ध्यक्ष, हिंदी विभाग, एम. इ. एस कल्लटी कोलेज, मन्नारक्काट, पालक्काट, केरल, भारत

सारांश
आजादी के बाद चरित्र और मूल्यों का क्षरण हमारे भारतीय समाज की निरन्तर घटनेवाली सबसे बड़ी दुर्घटना बन गई है। लघुकथा में वर्तमान समय के गहन मंथन आत्मसंघर्ष अन्तर्द्वन्द्व, मूल्यों के क्षरण एवं सत्ता द्वारा जनसाधारण की वंचना निहित है। सधे हुए लेखक के लिए कथ्य नया या पुराना नहीं होता बल्कि वह अपने कलात्मक स्पर्श से कथ्य की बारीकी के नऐ आयामों सूत्रपात कर सकता है| लघुकथा में शीर्षक से लेकर अतिम वाक्य के अतिम शब्द तक कसावट अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

मूलशब्द: भारतीय समाज, लघुकथा, लघुकथा में स्त्री, भूख और गरीबी, दलित संघर्ष

प्रस्तावना

आजादी के बाद चरित्र और मूल्यों का क्षरण हमारे भारतीय समाज की निरन्तर घटनेवाली सबसे बड़ी दुर्घटना बन गई है। आम आदमी आज भी सब कुछ खोने के लिए तैयार है, पर अपने मूल्यों से डिगने को तैयार नहीं है। यही आम आदमी भ्रष्टाचार की सुनामी से ग्रस्त समाज में एकमात्र आशा की किरण है। यह आम आदमी किसी अखबार के पन्नों की कहानी नहीं बनता,अधिकार-शून्य होने पर भी मानवता के मूल्यों की स्थापना के लिए कटिबद्ध है। लघुकथा की संक्षिप्त-सी परिभाषा देनी हो तो कहा जा सकता है कि इसमें इसके नाम वाले दो तत्व ‘लघु’ तथा ‘कथा’ अवश्य होने चाहिएँ. लघुकथा अपने सामाजिक सरोकारों और साहित्यिक परिपक्वता को निभाने में अन्य विधाओं से कही भी पीछे नहीं है। किसी भी विधा में कम से कम शब्दो में गहन से गहनतम बात कहना आसान नहीं, बल्कि कठिन भी है। लघुकथा में शीर्षक से लेकर अतिम वाक्य के अतिम शब्द तक कसावट अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।हिन्दी की लघुकथाओं का सामाजिक कैनवास विस्तृत होता जा रहा है।

ये मानवीय हितों,दुखों और परिवेश से पूरी तरह जुड़ गई हैं। मनुष्य और उसके आचरण के साथ ये लघुकथाएँ सम्मिलित होकर उनकी प्रकृति एवं प्रवृत्ति को यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं। रामेश्वर काम्बोज ‘हिमांशु‘ के अनुसार-लघुकथा में वर्तमान समय के गहन मंथन आत्मसंघर्ष अन्तर्द्वन्द्व, मूल्यों के क्षरण एवं सत्ता द्वारा जनसाधारण की वंचना निहित है। सधे हुए लेखक के लिए कथ्य नया या पुराना नहीं होता बल्कि वह अपने कलात्मक स्पर्श से कथ्य की बारीकी के नऐ आयामों सूत्रपात कर सकता है

लघुकथा में स्त्री

उपन्यासकार राजा राऊ ने अपने उपन्यास 'साँप और रस्सी' में लिखा है-'स्त्री भूमि है, वायु है,ध्वनि है, मन की सूक्ष्म परत है,अग्नि है, गीत है, संगीत है, भाव है। स्त्री के विविध-रूपों से साहित्य भरा पड़ा है। माँ,बेटी,प्रेयसी, पत्नी को लेकर विभिन्न विधाओं में अनेक रचनाओं का सृजन हुआ है। प्रेम करने वाली और घर चलाने वाली स्त्रियाँ नहीं होती तो यह दुनिया एक मरुस्थल के अतिरिक्त क्या होती। स्त्री अपने इन गुणों की बनावटी प्रशंसा के जाल में फँसकर प्राय: प्रताड़ित और इस्तेमाल होती रही है। स्त्री का श्रम और शरीर दोनों से शोषण होता है। दिन भर खटती औरत को रात को भी चैन नहीं।नारी-सुलभ जिन विशेषताओं काउल्लेख यहाँ हुआ है, उन्हीं के तहत स्त्री ममतामयी माँ है! माँ को लेकर अनेक मार्मिक लघुकथाएँ लिखी गईं। वह संतान के लिए बड़ी से बड़ी बलि देने को तत्पर रहती है। हर धर्म में माँ एक सी होती है और हर माँ का बस एक ही धर्म होता है संतान के प्रति माँ का प्यार निस्वार्थ सच्चा और तर्कातीत होता है। माँ,ममता, ममत्व शीर्षकों से लिखी गई कथाएँ इसका प्रमाण हैं!

आज भी लड़का-लड़की के बीच भेद किया जाता हैं। बेटी की तुलना में बेटे को वरीयता दी जाती है. (लड़का-लड़की: नरेन्द्र कौर छाबड़ा') लड़की (श्यामसुंदर दीप्ति) में एक बहुत ही महीन बात की ओर संकेत किया गया है। सुकेश साहनी की लघुकथा 'पितृत्व' में बेटी और बहू के बीच भेद की मानसिकता चित्रण है।अनिन्दिता की ' अभियान' और श्यामसुन्दर अग्रवाल की 'खरीदी हुई मौत' दहेज की कुप्रथा पर प्रहार करती विचारपरक लघुकथाएं हैं। 'कई बार औरत ही औरत की दुश्मन होती है चित्रा मुद्‌गल की 'नाम'पति को परमेश्वर मान अन्याय सहती स्त्री के मानस पर व्यंग्य करती प्रभावी लघुकथा है। रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु की, स्क्रीन टेस्ट, में औरत के शोषण की विभिन्न स्थितियों का चित्रण है।

'एक पवित्र लड़की' बलात्कार पीड़िता रंजना की उस सोच को व्यक्त रकती है जिसमें ब्लात्कार पीड़िता को समाज के द्‌वारा यह अहसास कराया जाता है कि वह किसी के लायक नहीं रही, अपवित्र हो गई। लेकिन गौतम ने उससे कहा क्या उस वहशी दरिन्दे ने तेरे शरीर के साथ तेरा मन भी लूट लिया? ब्लात्कारी शरीर को ही अपवित्र कर सकता है, मन को नहीं। 'उस स्त्री की अंतिम इच्छा' भारतीय स्त्री की उस विडम्बना को व्यक्त करती हैं जिसमें उसे एक ओर तो देवी रूप में पूजा जाता है दूसरी ओर दहेज के लिए या गर्भ में ही बोझ समझ कर खत्म कर दिया जाता हैं। इस लघुकथा में सरल शब्दों में रंजना के गहरे दुख को अभिव्यक्ति दी गई है। सुकेश साहनी की कसौटी इंटरनेट के युग में खुलेआम स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों की उस माँग की पड़ताल करती है;जो इस आधुनिक युग में वर्जनाओं को समाप्त करने की घोषणा करने पर उतारू लगते हैं। साँरी सुनन्दा यू हैव नॉट क्वालिफाइड। यू आज नाइंटी फाइव परसेंट प्युअर। वी रिक्वाअर एटलीस्ट फोर्टी परसेंट नाँटी यह कथा भारतीय संस्कारों के कमजोर पड़ने को दर्शाती है दूसरी भाषा के शब्दों के प्रयोग ने भी लघुकथा के तारतम्य को प्रभावित नहीं किया है।

भूख और गरीबी की समस्या

लघुकथा जीवन्त क्षणों को साफ सुथरी और ताकतवर भाषा में व्यक्त करने वाली ऐसी विधा है जिसका शब्दों के संयम और भाषा के विकास से सीधा संबंध आता है। सीधी सादी भाषा को आधार बनाकर कुछ शब्दों में जीवन की उथल पुथल को व्यक्त करना लघुकथा का एक तरह से अपना स्वभाव है-

- माँ भूख लगी है, रोटी दे दो'

- रोटी? अभी नहीं है बच्चे!
- कब होगी...?
- जब तेरे बाबा आएँगे।
- बाबा तो कई दिनों से नहीं आए।
- वह जरूर आएँगे मेरे बच्चे।
- अच्छा तो तुम कोई और चीज दे दो।
- घर में कोई चीज नहीं है।
- फिर पैसा ही दे दो।
- पैसा भी नहीं है।
- पर मुझे भूख लगी है, मैं क्या खाऊँ?
- तो मुझे खा ले राक्षस।
- मगर कैसे.... (माँए और बच्चे/रमेश बतरा)

आज गाँव की गुमटी में पेप्सी और कोला तो उपलब्ध है, मगर ग्रामीणों की बुनियादी आवश्यकताओं की वस्तुएँ नहीं। जरूरत है चालाकी से की जा रही इस सौदागिरी को पहचानने की। विदेशी सेटेलाइट चैनलों के शब्द-कोष में 'जन-हित' शब्द नहीं है। वहाँ सिर्फ़ मुनाफा है। वे अपने अंशधारकों के प्रति उत्तरदायी हैं, दर्शकों के प्रति नहीं।

दलित संघर्ष

हिन्दी लघुकथा ने दलित जीवन के विभिन्न चित्र प्रस्तुत किये है. दलित साहितय में दलित संघर्ष की अभिव्यक्ति काफी तीखी रही है, उसे ओर तल्ख होने की जरूरत है क्योंकि मनुष्य के दुराग्रह इतनी आसानी से नहीं मिटते उसके लिए विमर्श के साथ सामाजिक आन्दोलन की भी आवश्यकता है, छुआछूत की बात 'अछूत' (यास्मीन (कथा में व्यक्त हुई है। इस भेदभाव पर अछूत मजदूरनी का तर्क बड़ा सशक्त है, 'आपके घर में गेहूँ छू दिया तो उसका सत्यानास हो गया और खेत में हम ही लोगन के विरादर काटत, ढोवत है, बोरा मा भरत है, तब नाहीं सत्यानास होता है।'। विवेकहीन भेदभाव को युगों से ढोते रहे लोगों में अब कुछ समझ पैदा होने लगी है और उसका जवाब देने का साहस भी उत्पन्न हुआ है।
छोटे से बच्चे ने सफ़ाईवाले के घर की रोटी क्या खाई, माँ विफर गई, 'रोटी का टुकड़ा' (भूपिन्दर सिहं (कथा का यह वार्तालाप देखें।

'जा तू भी सफ़ाईवाला बन जा, तूने उनकी रोटी क्यों खाई?
'उनके घर का एक टुकड़ा खाकर मैं सफ़ाईवाला हो गया
'और नहीं तो क्या?'
'और वे हमारे घर की सालों से रोटी खा रहे हैं वे क्यों नहीं ब्राह्मण हो गए?'

दलित स्त्रियों के यौन शोषण से उत्पन्न लड़कियों को भी वे अपनी हवस का शिकार बना लेते है, 'ई बड़े लोग खुद ही बीज बोते हैं और खुद ही फसल काट लेते है' 'बीज का असर '(सतीश राठी (उच्च जातियाँ सामाजिक नैतिकता से डॉ .रामकुमार घोटड़ ने 'एक युद्ध यह भी' कथा में दलित के प्रतिकार को विशिष्ट ढंग से दर्शाया है। झीमती के पेट में दो भ्रूण पल रहे थे, एक बलात्कारी ठाकुर विचित्रसिंह का व दूसरा अपने पति बदलू का। वे आपस में लड़ रहे है। 'सुरक्षित सीट' (डॉ.पूरन सिंह (सवर्णों द्वारा जाति व राजनीति के मेल से गाँव में अपना वर्चस्व बनाए रखने की सरल व सशक्त रचना है। गाँव में सवर्ण अवर्णों की तुलना में एक प्रतिशत होने पर भी प्रधानी सवर्णों के पास ही रहती है। सुरक्षित सीट घोषित होने के बाद भी सरपंच संतो चमारिन पंडित जी के घर झाड़ू-पोंछा ही कर रही है। गाँव में हर हाल में जाति ही सर्वोच्च है-यह रचना इस तथ्य को सामने लाती है. डॉ. रामकुमार घोटड़ की 'एक युद्ध यह भी' रचना दलित संदर्भों में संघर्ष-चेतना को प्रतीक रूप में उभारते हुए सवर्णों की संकीर्ण मानसिकता पर छींटाकशी करती है।रीढ़' (डॉ .

सतीश दुबे (सवर्णों की सदियों से चली आ रही मानसिकता की दस्तावेजी रचना है। ठाकुर पिता अपने पुत्र को दलितों के बारे में कहते हैं-'"गरीब और गरीबी गाँव की रीढ़ है।...इन लोगों से इनकी प्रगति की बात कहो, पर होने मत दो।'"

बच्चोंकी समस्यायें

जीवनयात्रा में व्यक्ति सुख की साँस लेने के लिए बार - बार बचपन की ओर लौटता है। बचपन के अनमोल रतन,जैसे -वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी, कंकड़ पत्थर,पानी में किलोल करते क्षणों को कौन याद नहीं करता !बच्चों के भावजगत में प्रेम प्रमुखता से है, बच्चे प्रेम की भाषा समझते है, कमलेश भट्ट कमल की लघुकथा 'प्यास' में मालिक के बच्चे, नौकरानी बालिका गुड्डी के साथ मैत्री भाव से ही जुड़े हैं; जिसे उसकी मम्मी नहीं समझ पाती हरिमोहन शर्मा की सिद्धार्थ ' कथा में बालक घायल पिल्ले को गोद में लेकर पानी पिलाने का प्रयास करता है। बच्चे का स्पर्श पाकर और गले में दो बूँद पानी उतरते ही पिल्ले ने आँखे खोल ली। बच्चे बचपन में ही वयस्क होने लगते हैं जब उन्हें गरीबी के कारण कमाई करनी पड़ती है। उनका बचपन खो जाता है लेकिन एक आत्मविश्वास भी उनके चेहरे पर झलकने लगता है । सुकेश साहनी की 'स्कूल' का ट्रेन में चने बेचने गया बालक तीन दिन बाद लौटा तो उसमें आत्मविश्वास की चमक देखकर माँ हैरान रह गई, कि इन तीन दिनों में उसका बेटा इतना बड़ा कैसे हो गया ? वह रात - दिन उसकी चिंता करती थी। लेकिन अब बेटा उसकी चिंता करता है माँ तुम्हें इतनी रात गये यहॉ नहीं आना चाहिए था। गरीबी बच्चों की छोटी - छोटी इच्छाओं को भी पूरा नहीं होने होती, बच्चों में परिवार की आर्थिक स्थितियों को समझने का सहज बोध होता है, फिर भी बच्चों की इच्छाएँ अपनी जगह है ही 'बीमार'(सुभाष नीरव (कथा की बच्ची 'ए' फोर एप्पल पढ़ रही है, पिता बीमार माँ के लिए एक सेब लाए है। बच्ची अपने पापा से कहती है 'पापा सेब बीमार लोग खाते है, फिर तुंरत ही कह उठती है-' मैं कब बीमार होऊगी पापा',यानी सेब खाने के लिए उसे बीमार होने की चाह है।

आजहमबच्चोंको खेलने खेलने की मौक़ा नहींदे रहेहै. अशोक भाटिया जी अपनी 'सपना ' नामक कहानी में यही बात बता रहे है.इसकहानी के ब्च्चा कह रहा है,"अम्मा,जब मै यूनिवेर्सिटि मे पढ़लूंगा उसके बाद मैं खूब खेलूंगा,कोईनहीं करूंगा "बच्चों के कोरे कागज जैसे मन पर हमारे व्यवहार, बातचीत, आचरण छप जाता है। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए उनके कोमल मन पर कोई गलत संदेश न जाने पाए। बच्चों के कोमल मन पर हम बड़े ही भेदभाव के बीज बो देते हैं। जैसे सूर्यकांत नागर की लघुकथा 'विष-बीज' यही संदेश देती है कि बच्चों में साम्प्रदायिक भावना के बीज हम ही बोते हैं। संदीप ने फिर पूछा मुसलमान की दुकान का पानी पीने से क्या होता है पापा? लग रहा था, मुलायम ज़मीन पर बबूल और थूहर बो दिए जाने का पाप मुझसे हो गया है।माधव नागदा की लघुकथा 'एहसास' बच्चों के साफ मन को दर्शाती है जिसमें वह अपनी खुशी अपने दोस्तों को बाँट कर खुश होता है।

'अपने घर जाओ अंकल' बाल मनोविज्ञान को अभिव्यंजित करती एक लाजवाब लघुकथा है। शहर में कर्फ्यू है, लेकिन बच्चे क्या जानें कर्फ्यू ! वे सुनसान सड़क परखेलने के लिए उतर पड़ते हैं। पुलिसवाला उन्हें समझाता है और घर जाने के की सलाह देता है। वह कहता है, "कर्फ्यू में घर से बाहर निकलने वाले को बन्दूक से गोली मार दी जाती है, समझे!" एक बच्चा मासूमियत से उससे कहता है, "तुम भी तो घर से बाहर सड़क पर घूम रहे हो...तुम्हें भी तो कोई गोली मार सकता है...तुम भी अपने घर जाओ न अंकल।

मूल्यों के नैतिक अवमूल्यन

आज भारतीय समाज जिस तरह से मूल्यों के नैतिक अवमूल्यन की गिरफ्त में है और यह स्थिति लगातार जिस तरह से नीचे गिर रही है वह एक सभ्य समाज के लिए चिंता का विषय बनी हुई है।समाज में, व्यवस्था में जड़ जमा चुके भ्रष्टाचार पर से आवरण हटाती रामकुमार आत्रेयकी हथियार लघुकथा में जहाँ तीन साथी अपनी-अपनी हिफाजत के लिए कोई न कोई हथियार खरीदने की योजना बना रहे हैं। वहाँ चौथे साथी की यह बात-'जब तक मेरे पास कोई हथियार नहीं है,तब तक मैं सुरक्षित हूँ' - लघुकथा को अति महत्वपूर्ण बनाती है। बिन शीशों का चश्मा में तो स्वयं गाँधी जी बिन शीशों का चश्मा पहनना सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि गाँधी जी गाँधीवादी लोगों द्वारा उनके नाम पर किये जाने वाले नाटक को देखना नहीं चाहते

दाम्पत्य जीवन की सफलता जहाँ नारी को सुरक्षा प्रदान करती है, असफलता उसे गहरे गर्त में धकेल सकती है। बालासुन्दरं गिरि ने 'बीवी का दर्द' लघुकथा में इस पीड़ा को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है. अशोक भाटिया की 'रिश्ते' सेवा-निवृत्ति के आत्म-दुख की भाषा को नया अर्थ देती है। यह सतही मानसिकता और कुंठित भावना की विस्फोटक कथा है। 'परमिट' लघुकथा सुरक्षा और व्यवस्था के गिरते नैतिक और चारित्रिक मूल्यों की साफ भाषा की लघुकथा है। यह धार्मिक समारोहों में नारी-सौंदर्य का सुख प्राप्त करनेवाले पुरुषों एवं व्यवस्थापकों की सेक्स भावना और मानसिकता की अंदरूनी परतों को खोलती है। यह नैतिक मूल्यों से चारित्रिक मूल्यों की गिरावट को जाहिर तो करती ही है, साथ ही सामाजिक-नैतिक मूल्यों के दिवालियेपन का चिट्ठा भी प्रस्तुत करती है,

बुजुर्गों की समस्या रत्नकुमार सांभरियाकी 'बँटवारा' में आज की नौजवान पीढ़ी की बुजुर्गों के प्रति संवेदनहीनता को बड़ी शिद्दत से उभारा गया है। दो भाइयों में बँटवारा हुआ। काम करने योग्य सास को तो बहू लेने को तैयार है लेकिन ससुर को नहीं क्योंकि वे न तो काम करेंगे तथा उनके घर में रहने से बहू को बंदिशों को सामना करना पड़ेगा। बेटे में भी इतना साहस नहीं है कि वह पत्नी की बात का विरोध कर सके।

डॉ. शील कौशिक की रायमेंनौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों को उचित सम्मान नहीं दे रहे है,बल्कि उसकी हँसी भी उड़ाती हैं। 'पीढ़ी-अंतर' की फैशनेबल लड़कियाँ वृद्धा को बस में न केवल सीट देने से इनकार कर देती हैं, बल्कि उसकी हँसी भी उड़ाती हैं। जबकि वृद्धा धक्का लगने के कारण गिरी युवती को सीट पर अपने साथ बैठा लेती है।'तमाचा' के बुजुर्ग दम्पति के तीनों बेटे अच्छे पैसे वाले हैं, फिर भी उनमें से कोई भी उन्हें अपने पास रखने को तैयार नहीं है। लोकलाज के लिए तीनों उन्हें चार-चार माह अपने पास रखते है। इस व्यवस्था से परेशान बुजुर्ग अंततः वृद्धाश्रम में चले जाते हैं। 'भीतरी सच' के माता-पिता इसलिए परेशान हैं कि एक कनाल की बड़ी कोठी बना लेने के बाद वे अपने बच्चों से कट से गए हैं।

मध्यवर्गीय जीवन कीविसंगतियों

आज के भौतिकवादी युग में मध्यवर्ग भीतर से तो दुखी है ।वह उपेक्षा एवं अलगाव का जीवन जी रहा है; लेकिन दूसरों को दिखाने के लिए वह हँसी का मुखौटा लगाए घूम रहा है ।इस विसंगति को फाल्ट, आईना,घर एवं बोंजाई नामक लघुकथा में देखा जा सकता है।अभाव के कारण व्यक्ति का सही रूप कभी सामने नहीं आ सकता।अभाव से तात्पर्य है-एक सामान्य जीवन- यापन की हैसियत भी न हो पाना । पुष्पलता कश्यप ने 'कागज़ की नाव' में जीवन -यापन के लिए न्यूनतम सुविधाओं के लिए संघर्षरत अभावग्रस्त परिवार की बेबसी

को विभिन्न छोटी-छोटी स्थितियों के सन्दर्भ में सधी हुई भाषा में अनुस्यूत किया है । दहेज दानव जैसी सामाजिक कुरुतियों ने पहले की अपेक्षा आज कहीं अधिक मारक स्थिति उत्पन्न कर दी है। नीरव ने ’कत्ल होता सपना’ और ’नालायक’ लघुकथाओं में इस विषय को गंभीरता से अभिव्यक्त किया है

साहित्य की किसी भी विधा का महत्त्व इस बात से तय होता है कि वह विधा समग्रतः अपने साहित्यिक उद्देश्य में कहाँ तक सफल है। इस परिप्रेक्ष्य में लघुकथा के विधागत योगदान का मूल्यांकन करना हो तो हमें उसके फलक पर छाए तमाम सृजन-बिन्दुओं पर दृष्टि डालनी होगी, जो फलक की व्यापकता के भी कारण बनते हैं।

संदर्भ सूची

1. असभ्यनगर) लघुकथा-संग्रह) लेखक-रामेश्वर काम्बोज‘ हिमांशु' अयन प्रकाशन 1/20, महरौली, नई दिल्ली 110030.
2. देह-व्यापार की लघुकथाएँ: सम्पादक-सुकेश साहनी, अयन प्रकाशन 1/20 महरौली, नई दिल्ली 110030.
3. डॉ.रंजित. एम्, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, एम्. इ. एस अस्माबी कोलेज, कोडून्गाल्लूर, त्रिस्सूर जिला, केरल 680671.